पतंजलि विश्वविद्यालय

University of Patanjali

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम्

2024-2025

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम्
पाठ्यक्रमः

उद्देश्य :

महर्षि पाणिनि प्रणीत अष्टाध्यायी कात्यायनमुनि प्रणीत वार्तिक एवं स्वकृत (भाष्यकारकृत) पदों की सूत्रानुसारी बृहद् व्याख्या महर्षि पतञ्जलि द्वारा जिसे ग्रन्थ में की गई है उसी का नाम महाभाष्य है। इस ग्रन्थ का अध्यापन कराने के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :-

- अष्टाध्यायी में निर्दिष्ट सम्पूर्ण व्याकरणशास्त्र के सिद्धान्तों का बोध कराना।
- कात्यायन मुनि प्रणीत वार्तिक एवं स्वकृत (भाष्यकारकृत) पदों की सूत्रानुसारी व्याख्या से अवगत कराना।
- व्याकरणशास्त्र की निर्माण विधि एवं शब्दशास्त्र का सम्पूर्णता से बोध कराना। **'यतो हि न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दादृते'**, ऐसा कोई भी ज्ञान लोक में नहीं है जो शब्द के बिना हो। **'तत्त्वावबोधः शब्दानां नास्ति व्याकरणादृते'** और शब्दों का तात्त्विक ज्ञान व्याकरण के बिना सम्भव नहीं। अतः व्याकरणशास्त्र का अध्यापन कराया जाता है।
- व्याकरणशास्त्र के जो दार्शनिक सिद्धान्त हैं, उनका बोध कराना।
- भारतीय संस्कृति सभ्यता एवं मानवीय आदर्शों से अवगत करना। क्योंकि महाभाष्य केवल संस्कृत व्याकरण का ही ग्रन्थ नहीं है, अपितु यह विद्याओं का वारिधि है। अतः भर्तृहरि लिखते हैं -
  'कृतेऽथ पतञ्जलिना गुरुणा तीर्थदर्शिना। सर्वेषां न्यायबीजानां महाभाष्ये निबन्धने।
- आचार्य सायण विरचित धातुवृत्ति ग्रन्थ के माध्यम से धातुओं का विविध प्रक्रियाओं में बोध कराना।
- वैदिक साहित्य एवं संस्कृत साहित्य के कुछ ग्रन्थों का अध्ययन कराना।

परिणाम :

- इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी संस्कृत भाषा सम्बन्धी सम्पूर्ण सिद्धान्तों से अवगत होकर संस्कृत व्याकरण एवं संस्कृत साहित्य का उपदेश करने में समर्थ हो जाता है।
- सम्पूर्ण व्याकरण महाभाष्य को महर्षि पतंजलि ने पूर्वपक्ष एवं उत्तरपक्ष की चर्चा के रूप में प्रस्तुत किया है अतः विद्यार्थी भी इस शैली का परिचय प्राप्त कर आलोचनात्मक दृष्टिकोण एवं सामाजिक स्वीकार्यता युक्त स्पष्ट निर्णय लेकर जीवन को उन्नत बनाता है।
- महाभाष्य अध्ययन के द्वारा व्याकरण के साथ ही उस समय की सामाजिक स्थिति सांस्कृतिक सभ्यता एवं मानवीय आदर्शो के बोध पूर्वक वर्तमान परिपेक्ष में सामञ्जस्य स्थापित कर सांस्कृतिक संरक्षण एवं संवर्धन करता है।
- सम्पूर्ण व्याकरण का अशेष ज्ञान प्राप्त कर लेने से शब्द के मर्म को अर्थात् प्रकृति प्रत्यय एवं निर्वचन पूर्वक संशय रहित शब्दार्थों को समझकर योग, आयुर्वेद एवं वैदिक वाङ्मय के तत्वों को आत्मसात करता हुआ समाज में निर्भ्रान्त ज्ञान का उपदेश करके राष्ट्रीय चेतना को उन्नत बनाता है।

MA SANSKRIT-VYAKARANAM CBCS 2024-25

Semester - I

S.No.	Course Code	Course Title	Lecture per week			Total Credit
			L	T	P	
1	**MV-CT-101**	महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायप्रथमपादस्य प्रथमद्वितीयाह्निके)	3	1	0	4
2	**MV-CT-102**	महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायप्रथमपादस्य तृतीयचतुर्थपञ्चमाह्निकानि)	3	1	0	4
3	**MV-CT-103**	महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायप्रथमपादस्य षष्ठसप्तमाह्निके)	3	1	0	4
4	**MV-CT-104**	महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायप्रथमपादस्य अष्टमनवमाह्निके)	3	1	0	4
5	**MV-CT-105**	वैयाकरणभूषणसारः (धात्वर्थनिर्णयः) पद्यकाव्यं च	3	1	0	4
6	**MV-AEC1-106 (1)**	Basics of Computer Application	1	0	**2**	2
	MV-AEC1-106 (2)	योगचिकित्सा-1				
					TOTAL	**22**

Semester - II

S.No.	Course Code	Course Title	Lecture per week			Total Credit
			L	T	P	
1	**MV-CT-201**	महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायस्य द्वितीयपादः)	3	1	0	4
2	**MV-CT-202**	महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ)	3	1	0	4
3	**MV-CT-203**	महाभाष्यम् (द्वितीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ)	3	1	0	4
4	**MV-CT-204**	महाभाष्यम् (द्वितीयाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ)	3	1	0	4
5	**MV-CT-205**	वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्डम्) गद्यकाव्यं च	3	1	0	4
6	**MV-SEC1-206 (1)**	Communication Technology	1	0	2	2
	MV-SEC1-206 (2)	योगचिकित्सा-2/				
	MV-SEC1-206 (3)	Yog Vigyanam (Only Practical)				
					TOTAL	**22**

Semester - III						
S.No.	Course Code	Course Title	Lecture per week			Total Credit
			L	T	P	
1	MV-CT-301	महाभाष्यम् (तृतीयाध्याय:)	3	1	0	4
2	MV-CT-302	महाभाष्यम् (चतुर्थाध्याय:)	3	1	0	4
3	MV-CT-303	महाभाष्यम् (पञ्चमाध्याय:)	3	1	0	4
4	MV-CT-304	धातुवृत्ति: (भ्वादिगण:)	3	1	0	4
5	MV-GE-305 (1)	परिभाषेन्दुशेखर: चम्पूकाव्यं च	3	1	0	4
	MV-GE-305 (2)	भाषा विज्ञान				
	MV-GE-305 (3)	स्वर्णिमकाल का इतिहास-1				
6	MV-SEC2-306 (1)	भारतीय संगीत-गायन/	1	0	2	2
	MV-SEC2-306 (2)	भारतीय संगीत-वादन				
	MV-SEC2-306 (3)	सस्वरवेदपाठ:				
					TOTAL	22

Semester - IV						
S.No.	Course Code	Course Title	Lecture per week			Total Credit
			L	T	P	
1	MV-CT-401	महाभाष्यम् (षष्ठाध्याय:)	3	1	0	4
2	MV-CT-402	महाभाष्यम् (सप्तमाध्याय:)	3	1	0	4
3	MV-CT-403	महाभाष्यम् (अष्टमाध्याय:)	3	1	0	4
4	MV-CT-404	धातुवृत्ति: (अदादि-कण्ड्वादिगणा:)	3	1	0	4
5	MV-GE-405 (1)	परमलघुमञ्जुषा नाटकं च	3	1	0	4
	MV-GE-405 (2)	स्वर्णिमकाल का इतिहास-II				
6	MV-AEC2-406	लघु शोध लेखन, Research Methodology & Project Design	3	1	0	4
					TOTAL	24
					GRAND TOTAL (Credits)	90

विषय विशेषज्ञ

प्रो. श्रीनिवास वरखेडी
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

विषय विशेषज्ञ

प्रो. शिवानी वी.
डीन-शास्त्रसंकाय कर्नाटक संस्कृत
विश्वविद्यालय, बैंगलुरू

विभागाध्यक्ष

(डॉ. मनोहर लाल आर्य)
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् प्रथमसत्रम्

पूर्णाङ्कः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-70
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-30
समयः-होरात्रयम्

प्रथमपत्रम्- महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायप्रथमपादस्य प्रथमद्वितीयाह्निके)

MV-CT-101 Credit-4

उद्देश्य-

- शब्दानुशासन का प्रस्ताव, शब्द का स्वरूप, शब्दानुशासन के प्रयोजन, शब्दानुशासन निर्माणरीति, पाणिनी आचार्य के शास्त्र की प्रवृत्ति, शब्द के ज्ञानमें धर्म आहोस्विद् प्रयोग में, व्याकरण शब्द का अर्थ विषयों से अवगत कराना ।
- वर्णमाला में निर्दिष्ट वर्णों एवं प्रत्याहार सूत्रों पर पक्ष प्रतिपक्ष पूर्वक विचार करा कर विचारशील एवं पुरुषार्थी व्यक्तित्वों का निर्माण करना ।

परिणाम-

- महाभाष्य का अध्ययन कर छात्र अपनी बुद्धि को सूक्ष्म करता हुआ किसी भी क्षेत्र में एक कुशल नेतृत्व का निर्वहन करने में समर्थ हो जाता है ।
- इससे शब्द के ज्ञान में धर्म है अथवा प्रयोग में धर्म इस विषय को समझकर शब्दों का धर्म के अनुरूप प्रयोग करता है एवं संस्कृति के उत्थान में एक उत्कृष्ट भूमिका निभाता है।
- व्याकरण शब्दों की संरचना व उसका यथार्थ बोध कराने वाला ग्रंथ है, इसके अध्ययन से सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय को समझने की योग्यता प्राप्त हो जाती है।
- इससे विद्यार्थी वर्णमाला में निर्दिष्ट वर्णों व प्रत्याहारों के निर्माण में निपुण होकर व्याकरण व अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में एक श्रेष्ठ आचार्य की भूमिका का निर्वहन करता हुआ श्रेष्ठ आचार्यों का निर्माण करता है।

व्याकरणमहाभाष्यम् (प्रथमाध्यायस्य प्रथमः पादः) (१, २ आह्निके) **70**

इकाई-1 **18**

शब्दानुशासनस्य प्रस्तावः, शब्दस्य स्वरूपम्, शब्दानुशासनस्य प्रयोजनानि

इकाई-2 **18**

शब्दानुशासननिर्माणरीतिः, पाणिन्याचार्यस्य शास्त्रस्य प्रवृत्तिः, शब्दस्य ज्ञाने धर्म आहोस्चित् प्रयोगे, व्याकरण शब्दस्य अर्थः

इकाई-3 **17**

अइउण्- एओङ् (सूत्राणां व्याख्या)

इकाई-4 **17**

हयवरट्- झभञ् (सूत्राणां व्याख्या)

सहायकग्रन्थाः-

1. **व्याकरणमहाभाष्यम्- महर्षिपतंजलिविरचितम्**
   प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठात, 38 यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7
2. **व्याकरणमहाभाष्यम्- व्याख्याकारः- पं. युधिष्ठिरो मीमांसकः**
   प्रकाशकः- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
3. **व्याकरणमहाभाष्यम्- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री**
   प्रकाशकः- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।
4. **व्याकरणमहाभाष्यम्- अनुवादकः- चारुदेवशास्त्री**
   प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसी दास, बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7

प्रश्नपत्रविषयका निर्देशाः

(क) पृष्टेषु पञ्चसु त्रयः प्रश्नाः समाधेयाः (४५)

(ख) पृष्टेषु अष्टासु पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः (२५)

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् प्रथमसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-70
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-30
समयः-होरात्रयम्

द्वितीयपत्रम्- महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायप्रथमपादस्य तृतीयचतुर्थपञ्चमाह्निकानि)

MV-CT-102 Credit-4

उद्देश्य-

- महर्षि पाणिनि विरचित अष्टाध्यायी के वृद्धिरादैच् से क्तक्वतू निष्ठा सूत्रों पर महर्षि पतञ्जलि कृत महाभाष्य का ज्ञान कराकर लौकिक उदाहरणों के साथ विद्यार्थी की बुद्धि को सूक्ष्म कर व्याकरण के गूढ़ सिद्धान्तों से अवगत कराना।

परिणाम-

- विद्यार्थी वृद्धिरादैच्, अदेङ्गुणः सूत्र के अध्ययन से संज्ञा संज्ञी निरूपण को समझकर विस्तार से बोधन कराने में समर्थ हो जाते हैं एवं भारत की प्राचीन शास्त्रीय नामकरण की पद्धति से भी परिचित होकर उनका अनुपालन करता है।
- इको गुणवृद्धी के अध्ययन से गुणवृद्धी के स्थान का निरूपण व विधि सूत्र में स्थित पदों के साथ विशेषण विशेष्य के प्रकार को समझकर परिभाषा सूत्रों का विधिसूत्रों में प्रयोग करने में निपुण हो जाता है।
- प्रगृह्य संज्ञा विधायक सूत्र के अध्ययन से विधि वाक्यों में प्रकृति भाव का ज्ञान होने से तद्विषयक वाक्यों का निर्माण कर लेता है।
- महाभाष्य का अध्ययन कर विद्यार्थी अनेक विषयों को समझने व उनको व्यापक रूप से प्रस्तुत करने में समर्थ हो जाता है।

व्याकरणमहाभाष्यम् (प्रथमाध्यायस्य प्रथमः पादः) (3, 4, 5 आह्निके) **70**

इकाई-1 (आह्निक-३) **18**

वृद्धिरादैच् (1.1.1)-इको गुणवृद्धी (1.1.3)

इकाई-2 (आह्निक-४) **13**

न धातुलोप आर्धधातुके (1.1.4)-दीधीवेवीटाम् (1.1.6)

इकाई-3 (आह्निक-४) **13**

हलोऽनन्तराः संयोगः (1.1.7)-नाञ्झलौ (1.1.10)

इकाई-4 (आह्निक-५) **13**

ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम् (1.1.11)-ईदूतौ च सप्तम्यर्थे (1.1.19)

इकाई-5 (आह्निक-५) **13**

दाधा घ्वदाप् (1.1.20)-क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.26)

सहायकग्रन्थाः-

1. **व्याकरणमहाभाष्यम्- महर्षिपतंजलिविरचितम्**
   प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठात, 38 यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7
2. **व्याकरणमहाभाष्यम्- व्याख्याकारः- पं. युधिष्ठिरो मीमांसकः**
   प्रकाशकः- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
3. **व्याकरणमहाभाष्यम्- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री**
   प्रकाशकः- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।
4. **व्याकरणमहाभाष्यम्- अनुवादकः- चारुदेवशास्त्री**
   प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसी दास, बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7

प्रश्नपत्रविषयका निर्देशाः

(क) पृष्टेषु पञ्चसु त्रयः प्रश्नाः समाधेयाः (४५)

(ख) पृष्टेषु अष्टासु पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः (२५)

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् प्रथमसत्रम्

पूर्णाङ्कः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-70
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-30
समयः-होरात्रयम्

तृतीयपत्रम्- महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायप्रथमपादस्य षष्ठसप्तमाह्निके)

MV-CT-103 Credit-4

उद्देश्य-

- अष्टाध्यायी सूत्रों के 'सर्वादीनि सर्वनामानि' सूत्र से 'अनेकाल्शित् सर्वस्य' पर्यन्त सूत्रों पर महर्षि पतञ्जलिकृत महाभाष्य का अध्ययन कराकर तत्वान्वेषण की वाद पद्धति से अवगत कराना, जिससे वह भविष्य में सरलता से सत्यतथ्यों का अन्वेषण कर सके।

परिणाम-

- इससे विद्यार्थी को सर्वनाम संज्ञा, अव्यय संज्ञा और इनके संज्ञियों को समझकर वाक्य में प्रयोग करता हुआ वाक्य रचना सौन्दर्य, प्रवचन व वाणी की कुशलता में निपुण हो जाता है।
- विभाषा के स्वरूप व उसके प्राप्ताप्राप्तादि भेदों के बारे में समझकर उनका व सम्पूर्ण अष्टाध्यायी का समग्र बोधन कराता है।
- ''अनेकाल्शित् सर्वस्य'' आदि सूत्रों के अध्ययन से आदेश की स्थान व्यवस्था के बारे में ज्ञान प्राप्त करके व्याकरण शास्त्रों को पढ़ाने की कुशलता और अधिक उन्नत बनाता है।
- महाभाष्य कें लौकिक न्याय सिद्ध परिभाषाओं के माध्यम से अपनी प्रज्ञा को अतिसूक्ष्म करता है और लोक व समाज में एक श्रेष्ठ नेतृत्व कर्तृत्व वा वक्तृत्व की भूमिका निभाता हुआ सबको सत्यपथ, सनातनपथ पर आगे बढ़ाता है।

व्याकरणमहाभाष्यम् (प्रथमाध्यायस्य प्रथमः पादः) (6, 7 आह्निक) **70**

इकाई-1 (आह्निक-६) **18**

सर्वादीनि सर्वनामानि (1.1.27)- पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरा... (1.1.34)

इकाई-2 (आह्निक-६) **13**

स्वमज्ञातिधना... (1.1.35)- कृन्मेजन्तः (1.1.39)

इकाई-3 (आह्निक-६) **13**

अव्ययीभावश्च (1.1.41)- न वेति विभाषा (1.1.44)

इकाई-4 (आह्निक-७) **13**

इग् यणः सम्प्रसारणम् (1.1.45) - षष्ठी स्थानेयोगा (1.1.49)

इकाई-5 (आह्निक-७) **13**

स्थानेऽन्तरतमः (1.1.50) - अनेकाल्शित् सर्वस्य (1.1.55)

सहायकग्रन्थाः-

1. **व्याकरणमहाभाष्यम्- महर्षिपतंजलिविरचितम्**
   प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठात, 38 यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7
2. **व्याकरणमहाभाष्यम्- व्याख्याकारः- पं. युधिष्ठिरो मीमांसकः**
   प्रकाशकः- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
3. **व्याकरणमहाभाष्यम्- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री**
   प्रकाशकः- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।
4. **व्याकरणमहाभाष्यम्- अनुवादकः- चारुदेवशास्त्री**
   प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसी दास, बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7

प्रश्नपत्रविषयका निर्देशाः

(क) पृष्टेषु पञ्चसु त्रयः प्रश्नाः समाधेयाः (४५)

(ख) पृष्टेषु अष्टासु पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः (२५)

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् प्रथमसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-70
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-30
समयः-होरात्रयम्

चतुर्थपत्रम्- महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायप्रथमपादस्य अष्टमनवमाह्निके)

MV-CT-104 Credit-4

उद्देश्य-

- अष्टाध्यायी सूत्रों के 'स्थानिवदादेशोऽनाल्विधौ' आदि अतिदेश सूत्रों से आरम्भ करके 'एङ्प्राचांदेशे' पर्यन्त सूत्रों पर महर्षि पतञ्जलि कृत महाभाष्य का बोध कराकर संस्कृत भाषा की सूक्ष्मता व वैज्ञानिकता एवं ऋषियों की सूक्ष्ममेधा से अवगत कराना।

परिणाम-

- 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' इसके अध्ययन से विद्यार्थी स्थानी व आदेश के स्वरूप का बोध कर अष्टाध्यायी में स्थानिकार्य आदेश को प्रतिपादित करने में निपुण हो जाता है एवं किसी भी शब्द के मूल में प्रवेश कर उसके वास्तविक अर्थ का निश्चय कर पाता है।
- विद्यार्थी 'तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य' इसका अध्ययन करके विधि वाक्यों में एकवाक्यता के माध्यम से सूत्रार्थ करके प्रयोगों की सिद्धि करने में समर्थ हो जाता है।
- विद्यार्थी 'स्वंरूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा' इत्यादि ग्राहक सूत्र के अध्ययन से गृहीत शब्द तथा वर्ण को आसानी से समझाने में समर्थ हो जाते हैं।
- महाभाष्य सभी तथ्यों को सूक्ष्मता से विचार करके लिखा गया है, अतः विद्यार्थी व्याकरण के माध्यम से संस्कृत वाङ्मय के प्रचुर भण्डार से तत्वों का अन्वेषण कर आत्म-उत्थान करता हुआ समाज में उनका विस्तार करता है।

व्याकरणमहाभाष्यम् (प्रथमाध्यायस्य प्रथमः पादः) (8, 9 आह्निक) **70**

इकाई-1 (आह्निक-8) **18**

स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ (1.1.56)

इकाई-2 (आह्निक-8) **13**

अचः परस्मिन्.... (1.1.57)- द्विर्वचनेऽचि (1.1.59)

इकाई-3 (आह्निक-9) **13**

अदर्शनं लोपः (1.1.60)- तस्मिन्निति निर्दिष्टे..... (1.1.66)

इकाई-4 (आह्निक-9) **13**

स्वं रूपं शब्दस्य.... (1.1.68) - एङ् प्राचां देशे (1.1.75)

सहायकग्रन्थाः-

1. **व्याकरणमहाभाष्यम्- महर्षिपतंजलिविरचितम्**
   प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठात, 38 यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7
2. **व्याकरणमहाभाष्यम्- व्याख्याकारः- पं. युधिष्ठिरो मीमांसकः**
   प्रकाशकः- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
3. **व्याकरणमहाभाष्यम्- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री**
   प्रकाशकः- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।
4. **व्याकरणमहाभाष्यम्- अनुवादकः- चारुदेवशास्त्री**
   प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसी दास, बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7

प्रश्नपत्रविषयका निर्देशाः

(क) पृष्टेषु पञ्चसु त्रयः प्रश्नाः समाधेयाः (४५)

(ख) पृष्टेषु अष्टासु पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः (२५)

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् प्रथमसत्रम्

पञ्चमपत्रम्- वैयाकरणभूषणसारः (धात्वर्थनिर्णयः) पद्यकाव्यं च

MV-CT-105 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-70
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-30
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य -

- कौण्डभट्ट विरचित वैयाकरणभूषणसार के माध्यम से व्याकरणशास्त्र मे निहित व्याकरण के दार्शनिक सिद्धान्तों से अवगत कराना।
- काव्य के पारिभाषिक शब्दावली व उनके तात्पर्य का ज्ञान कराना।

परिणाम

- किसी भी तिङन्त पद के प्रत्येक अवयव के अर्थ निर्णय में पूर्ण समर्थ हो जाता है।
- काव्य हो सुक्ष्मता से पढ़ व पढ़ा सकने में समर्थ हो जाता है।

इकाई 1 - वैयाकरणभूषणसारः (धात्वर्थनिर्णयः) 12

प्रथमकारिकातः सप्तमकारिका पर्यन्तम्

इकाई 2 - वैयाकरणभूषणसारः (धात्वर्थनिर्णयः) 12

अष्टमकारिकातः चतुर्दशकारिका पर्यन्तम्

इकाई 3 - वैयाकरणभूषणसारः (धात्वर्थनिर्णयः) 12

पञ्चदश कारिकातः एकविंशतिकारिका पर्यन्तम्

इकाई 4 - दशरूपकम् (प्रथमप्रकाशः पूर्वार्धः) 12

द्वाविंशतिकारिकातः एकविंशतिकारिका पर्यन्तम

इकाई 5 - दशरूपकम् (प्रथमप्रकाशः उत्तरार्धः) 12

पाठ्य पुस्तकम-

1. वैयाकरणभूषणसारः - कंगला संस्कृत हिन्दीभाष्योपेतः
   प्रकाशकः- चौखम्बा कृष्णदास अकादमी वाराणसी
   वैयाकरणभूषणसारः (भैमीभाष्योपेतः)
   भीमसेन शास्त्री - राधा प्रेस नई दिल्ली
   वैयाकरणभूषणसारः - चौखम्बा संस्कृतप्रतिष्ठान
2. दशरूपकम् - डॉ. श्रीनिवास शास्त्री - प्रकाशक- साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार मेरठ।
   दशरूपकम् - डॉ भोला शंकर व्यास - चौखम्बा विद्याभवन

एम.ए. संस्कृतव्याकरणम् प्रथमसत्रम्

पूर्णाङ्कः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-70
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-30
समयः-होरात्रयम्

षष्ठपत्रम्- Basics of Computer Application

MV-AEC1-106 (1) Credit-2

Course Objective:

This syllabus can be tailored for students at different levels (school, college, or community learning) depending on the depth of coverage.

The course is designed to aim at imparting a basic level appreciation programme for the students. After completing the course, student is able to know foundational knowledge of computers, their applications, and how to use them effectively in daily life, education, and work environments. It helps to use the computer for basic purposes of preparing his personnel/business letters, Ms office suits, viewing information on Internet (the web), sending mails and other internet services etc. This helps the students can easily do our UG & PG dissertation, book writing and other related things in a very easy way.

Course Duration:

- Duration: 3 months (12 weeks)
- Frequency: 3 classes per week, (1 hours each class)
- Total Hours: 36 hours

Module 1: Introduction to Computers (3 Hours)

History of Computers, Types of Computers (Desktop, Laptop, Mobile Devices), Basic Components of a Computer (CPU, Input/Output Devices, Storage), Understanding Hardware vs. Software, Overview of Operating Systems (Windows, macOS, Linux)

Module 2: Operating Systems and File Management (4 Hours)

Navigating the Operating System Interface (Desktop, Taskbar, Start Menu), File and Folder Management (Creating, Renaming, Moving, and Deleting), Basics of File Types and Extensions, Installing and Uninstalling Applications, Data Backup and Security.

Module 3: Productivity Tools (11 Hours)

Concept of font, basic Concept of typing in Hindi, English & Sanskrit language. Touch typing practice through freely available software in English & Hindi.

Word Processing (e.g., Microsoft Word, Google Docs, One Note)- Creating and Editing Documents, Formatting Text and Pages, Adding Tables, Images, and Charts.

Spreadsheets (e.g., Microsoft Excel, Google Sheets)- Creating and Formatting Spreadsheets, Basic Formulas and Functions, Charts and Data Visualization

Presentation Software (e.g., Microsoft PowerPoint, Google Slides)- Designing Slideshows, Adding Transitions and Animations, Presenting Effectively.

Module 4: Internet and Online Tools (4 Hours)

Basics of Networking and the Internet, Browsers and Search Engines (Google, Bing, etc.), Email Basics- G-mail, Microsoft E-mail (Creating Accounts, Sending/Receiving Emails, Attachments, Folder, searching), Online Communication Tools (Zoom, Google Meet, Microsoft Teams), Internet Safety and Cybersecurity, Recognizing Scams and Phishing, Safe Online Practices.

Module 5: Digital Media and E-Learning (7 Hours)

Basic Image Editing Tools (e.g., Canva, Photoshop), Video Editing Basics (e.g., OpenShot, Windows Video Editor), Introduction to Blogging Platforms and Social-Media, E-library and other research related website (google scholar, pub-med, sci-hub etc).

Module 6: Coding and Emerging Technologies (3 Hours)

Introduction to Coding (Scratch or Python Basics), Understanding Artificial Intelligence and Machine Learning Basics, Cloud Computing and Storage (e.g., Google Drive, One Drive, Dropbox), Overview of loT (Internet of Things)

Module 7: Career and Practical Applications (4 Hours)

Creating a Digital Resume, Job Portals and Online Job Applications, Freelancing Platforms (Upwork, Fiverr), Exploring Certifications (Microsoft, Google, Coursera), SPSS & G Power software for Research analytics.

Resources and Materials:

1. Software: Microsoft Office Suite, Freeware Alternatives (Google Workspace, LibreOffice).

II. Reference Websites: Khan Academy, Codecademy, W3Schools.

III. Reference book: Fundamental of computer (V. Rajaraman B.P.B. Publication) Course on computer concept (Rahul Aggarwal & Surendra s. Chahar)

अथवा

षष्ठपत्रम् - योगचिकित्सा-१

MV-AEC1-106 (2) Credit-2

उद्देश्य :

- भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धति के समन्वित् स्वरूप का बोध कराना ।
- समन्वित चिकित्सा पद्धति के व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगो का निदान।
- योग, आयुर्वेद, पञ्चकर्म, षट्कर्म, नेचुरोपैथी, आहार चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, एक्यूपंचर, एक्यूप्रेशर एवं फिजियो थैरेपी जैसे समन्वित् भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धतियों के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक बोध द्वारा योग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्तित्व का निर्माण करना।

परिणाम :

- समन्वित चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षित विद्यार्थी समाज में साध्य-असाध्य रोगों से पीडित रोगियों को उपचार देकर उन्हें सम्पूर्ण आरोग्य का लाभ प्रदान करता है एवं भारतीय पुरातन चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है ।
- सेवा निष्ठ आजीविका का आलम्बन लेकर स्वयं आत्मनिर्भर होता हुआ अन्यों को भी रोजगार परक सेवा क्षेत्र में नियोजित करता है, उपकार परख उपचार की एक स्वस्थ परम्परा का संवाहक बनकर समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के मार्ग पर अग्रसर करता है ।

इकाई 1- योग एवं स्वास्थय (10 घण्टे)

इकाई 2- आयुर्वेद एवं स्वास्थ्य (10 घण्टे)

इकाई 3- आहार चिकित्सा (10 घण्टे)

इकाई 4- व्याधियों के अनुसार पथ्यापथ्य (10 घण्टे)

इकाई 5- प्राथमिक चिकित्सालय अथवा रसोई घर (10 घण्टे)

पाठ्यपुस्तकम्-

उपचार पद्धति, प्रकाशन- द्विव्य प्रकाशन, द्विव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार।

एम. ए.पाठ्यक्रमस्य द्वितीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः - १००
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः- ७०
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः- ३०
समयः-होरात्रयम्

प्रथमपत्रम् -महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायस्य द्वितीयपादः)

MV-CT-201 Credit-4

उद्देश्य-

- अष्टाध्यायी के प्रथम अध्याय के द्वितीय पद के अन्तर्गत विद्यमान- अतिदेश प्रकरण, स्वर प्रकरण, आशिष्य प्रकरण तथा एक शेष वृत्ति पर विस्तृत विवेचन।

परिणाम-

- 'गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्' आदि सूत्रों के अध्ययन से कित् ङित् का अतिदेश तथा इसके प्रतिषेध का ज्ञान सम्यक् रूप से कर लेते हैं तथा प्रयोग स्थलों में गुणवृद्धी निषेधादि कार्यो को विद्यार्थी सरलता से कर लेते हैं।
- एकशेष प्रकरण का अध्ययन करने से विद्यार्थी अनेक शब्द प्रयोग स्थलों में एक शब्द प्रयोग करने के साथ संस्कृत भाषा में उन्नत गति प्राप्त कर लेता है।
- 'कष्टं व्याकरणम्' व्याकरण का अध्ययन कठिन कार्य है अतः इसके अध्ययन से एक पुरुषार्थी कर्मयोगी व्यक्तित्व तैयार हो जाता है।

व्याकरणमहाभाष्यम् (प्रथमाध्यायस्य द्वितीयपादः) ७०

इकाई-1 (आह्निक-1) **२६**

गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन् ङित् (1.2.1). एकविभक्ति चापूर्वनिपाते (1.2.44)

इकाई-2 (आह्निक-2) **२३**

अर्थवदधातुरप्रत्ययः.... (1.2.45)- तिष्यपुनर्वस्वोर्नक्षत्र.....(1.2.63)

इकाई-3 (आह्निक-3) **२३**

सरूपाणामेकशेष.....(1.2.64)- ग्राम्यपशुसङ्घेष्व.....(1.2.73)

सहायकग्रन्था :-

१. व्याकरणमहाभाष्यम्:- महर्षिपतंजलिविरचितम्

प्रकाशक:- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, ३८ यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

२. व्याकरणमहाभाष्यम्:- व्याख्याकार:- पं. युधिष्ठिरो मीमांसकः

प्रकाशक:- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

३. व्याकरणमहाभाष्यम्:- सम्पादक:- श्री वेदव्रत शास्त्री

प्रकाशक:- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा।

४. व्याकरणमहाभाष्यम्:- अनुवादक:- चारुदेवशास्त्री

प्रकाशक:- मोतीलाल बनारसी दास,बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

प्रश्न पत्र विषय का निर्देशा:

(क) पृष्टेषु पञ्चसु त्रयः प्रश्नाः समाधेयाः (४५)

(ख) पृष्टेषु अष्टासु पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः (२५)

एम. ए.पाठ्यक्रमस्य द्वितीयसत्रम्

द्वितीयपत्रम्, महाभाष्यम् (प्रथमाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ)

MV-CT-202 Credit-4

पूर्णाङ्काः - १००
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः- ७०
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः- ३०
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- इत् संज्ञा तथा आत्मनेपद परस्मैपद, नदी, घि, कारक, निपात, उपसर्ग, गति, कर्मप्रवचनीय इत्यादि सूक्ष्म विषयों के अध्यापन के द्वारा मनस्वी, एकाग्र एवं कुशाग्र व्यक्तित्व का निर्माण करना।

परिणाम-

- इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने से विविध धातुओं के आत्मनेपद व परस्मैपद विषयक विभाग को समझकर तदनुसार रुपों का प्रयोग करने व बोधन में समर्थ हो जाते हैं।
- उपसर्ग व निपातादि संज्ञाओं को जाने लेने से विद्यार्थी संस्कृत वाङ्मय का गहनता से अध्ययन करके समाज में इन ग्रन्थों की शिक्षाओं का प्रचार कर सामाजिक जीवन के स्तर को उन्नत बनाता है।
- उपरोक्त सूक्ष्म विषयों के अध्ययन से तैयार विचार कुशल व पुरुषार्थी व्यक्तित्व मानव समाज को उचित दिशा में अग्रसर करता है।

व्याकरणमहाभाष्यम् ७०

इकाई-1 (प्रथमाध्यायस्य तृतीयपादः) (आह्निक-1) **१४**

भूवादयो धातवः (1.3.1)- स्वरितेनाधिकारः (1.3.11)

इकाई-2 (प्रथमाध्यायस्य तृतीयपादः) (आह्निक-1) **१४**

अनुदात्तङित आत्मनेपदम् (1.3.12)- लुटि च क्लृपः (1.3.93)

इकाई-3 (प्रथमाध्यायस्य चतुर्थपादः) (आह्निक-1) **११**

आ कडारादेका संज्ञा (1.4.1)

इकाई-4 (प्रथमाध्यायस्य चतुर्थपादः) (आह्निक-2) **११**

यू स्त्र्याख्यौ नदी (1.4.3)- बहुषु बहुवचनम् (1.4.21)

इकाई-5 (प्रथमाध्यायस्य चतुर्थपादः) (आह्निक-3, 4) **२०**

कारके (1.4.23)- परः संनिकर्षः संहिता (1.4.108)

सहायकग्रन्थाः–

१. व्याकरणमहाभाष्यम्:- महर्षिपतंजलिविरचितम्
प्रकाशकः– चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, ३८ यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

२. व्याकरणमहाभाष्यम्:- व्याख्याकारः- पं. युधिष्ठिरो मीमांसकः
प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

३. व्याकरणमहाभाष्यम्:- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री
प्रकाशकः– हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा।

४. व्याकरणमहाभाष्यम्:- अनुवादकः- चारुदेवशास्त्री
प्रकाशकः– मोतीलाल बनारसी दास,बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

प्रश्नपत्रविषयका निर्देशाः

(क) पृष्टेषु पञ्चसु त्रयः प्रश्नाः समाधेयाः (४५) (ख) पृष्टेषु अष्टासु पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः (२५)

एम. ए.पाठ्यक्रमस्य द्वितीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः - १००
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः- ७०
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः- ३०
समयः-होरात्रयम्

तृतीयपत्रम्- महाभाष्यम् (द्वितीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ)

MV-CT-203 Credit-4

उद्देश्य-

- पद सम्बन्धि विधि, अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीही और द्वन्द्व समासों पर विवेचन एवं समास में पूर्व पर प्रयोग विषयक विचार।

परिणाम-

- समर्थः पदविधिः सूत्र के अध्ययन से ऐक्य पद्य, ऐक्य स्वरता का ज्ञान के साथ समस्तपद व विग्रहवाक्यों का सुचारू रूप से बोधन में समर्थ हो जाता है।
- विविध समासों के स्वरूपों को जानने से संस्कृत वाङ्मय में स्थित जटिल वाक्यों के अर्थों को भी समझकर तद्विषयक भ्रान्तियों का निवारण एवं नवीन समास सम्बन्धित शब्द समूह की संरचना करने में समर्थ हो जाते हैं।
- इस प्रकारण के अध्ययन से उपसर्जन व अनुपसर्जन शब्दों की पहचान के साथ उनका पूर्व प्रयोग व पर प्रयोग करता हुआ दोष रहित समस्त पदों की संरचना करता है।

व्याकरणमहाभाष्यम् ७०

इकाई-1 (द्वितीयाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-1) **१४**

समर्थः पदविधिः (2.1.1)

इकाई-2 (द्वितीयाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-2) **१४**

सुबामन्त्रिते पराङ्गवत् स्वरे (2.1.2)- पूर्वकालैकसर्वजरत्....(2.1.48)

इकाई-3 (द्वितीयाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-3) **१४**

तद्धितार्थोत्तरपद.... (2.1.50)- मयूरव्यंसकादयश्च (2.1.71)

इकाई-4 (द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः) (आह्निक-1) **१४**

अर्ध नपुंसकम् (2.2.2)- शेषो बहुव्रीहिः (2.2.23)

इकाई-5 (द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः) (आह्निक-2) **१४**

अनेकमन्यपदार्थे (2.2.24) - कडाराः कर्मधारये (2.2.38)

सहायकग्रन्थाः—

१. व्याकरणमहाभाष्यम्:- महर्षिपतंजलिविरचितम्
प्रकाशकः— चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, ३८ यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

२. व्याकरणमहाभाष्यम्:- व्याख्याकारः- पं. युधिष्ठिरो मीमांसकः
प्रकाशकः— रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

३. व्याकरणमहाभाष्यम्:- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री
प्रकाशकः— हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा।

प्रश्नपत्रविषयका निर्देशाः

(क) पृष्टेषु पञ्चसु त्रयः प्रश्नाः समाधेयाः (४५)

(ख) पृष्टेषु अष्टासु पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः (२५)

एम. ए.पाठ्यक्रमस्य द्वितीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः - १००
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः- ७०
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः- ३०
समयः-होरात्रयम्

चतुर्थपत्रम्- महाभाष्यम् (द्वितीयाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ)

MV-CT-204 Credit-4

उद्देश्य-

- कारक विभक्ति एवं उपपदविभक्ति सम्बन्धि सूत्रों पर महर्षि पतंजलिकृत भाष्य का बोध ।
- समास में एकवद् भाव एवं लिङ्ग विषयक विधान पर महाभाष्य का ज्ञान प्रदान करना।
- अन्वादेश एवं आर्धधातुक विषयक धात्वादेशो का बोध ।
- तद्राजसंज्ञक प्रत्ययों, धातुओं एवं अव्ययों से विहित प्रत्ययो का लुक् विषयक विचार।

परिणाम-

- इस प्रकरण के अध्ययन से विद्यार्थी विभिन्न कारकों से सम्यक् विभक्ति संयोजन करने में समर्थ हो जाता है।
- इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के उपरान्त विद्यार्थी काव्य, महाकाव्य तथा नाटकादि के वाक्यस्वरूप को आसानी से हृदयाङ्गम करके प्रबोधन में समर्थ हो जाता है।
- द्विगु तथा द्वन्द्व आदि समास के लिङ्ग विषयक का ज्ञान करके शब्दों का यथार्थ बोधन कराता है।

व्याकरणमहाभाष्यम् ७०

इकाई-1 (द्वितीयाध्यायस्य तृतीयः पादः) (आह्निक-1) **१५**

अनभिहिते (2.3.1)- मन्यकर्मण्यनादरे.....(2.3.17)

इकाई-2 (द्वितीयाध्यायस्य तृतीयः पादः) (आह्निक-2) **१२**

कर्तृकरणयोस्तृतीया (2.3.18)- नक्षत्रे च लुपि (2.3.45)

इकाई-3 (द्वितीयाध्यायस्य तृतीयः पादः) (आह्निक-3) **१४**

प्रातिपदिकार्थलिङ्ग... (2.3.46)- कृत्यानां कर्तरि वा (2.3.71)

इकाई-4 (द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थः पादः) (आह्निक-1) **१५**

द्विगुरेकवचनम् (2.4.1)- ण्यक्षत्रियार्षञितो.... (2.4.58)

इकाई-5 (द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थः पादः) (आह्निक-2) **१४**

तद्राजस्य बहुषु..... (2.4.62)- लुटः प्रथमस्य डारौरसः(2.4.85)

सहायकग्रन्थाः–

१. व्याकरणमहाभाष्यम्:- महर्षिपतंजलिविरचितम्
प्रकाशकः– चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, ३८ यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७
२. व्याकरणमहाभाष्यम्:- व्याख्याकारः- पं. युधिष्ठिरो मीमांसकः
प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
३. व्याकरणमहाभाष्यम्:- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री
प्रकाशकः– हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा।

प्रश्नपत्रविषयका निर्देशाः

(क) पृष्टेषु पञ्चसु त्रयः प्रश्नाः समाधेयाः (४५)
(ख) पृष्टेषु अष्टासु पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः (२५)

एम. ए.पाठ्यक्रमस्य द्वितीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः - १००
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः- ७०
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः- ३०
समयः-होरात्रयम्

पञ्चमपत्रम्- वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्डम्) गद्यकाव्यं च

MV-CT-205 Credit-4

उद्देश्य :

- भर्तृहरि विरचित वाक्यपदीयम् के ब्रह्मकाण्ड में निहित व्याकरण शास्त्र के दार्शनिक सिद्धान्तों से अवगत कराना।
- काव्य के अध्ययन से भाषाविषयक सामर्थ्य का विकास करना।

परिणाम :

- व्याकरणशास्त्र के छिपे हुये दार्शनिक सिद्धातों से अवगत होकर समाज में संस्कृत, दर्शन वेदों के प्रति जागरूकता फैलाना।
- भाषाविषयक सामर्थ्य के विकास से भाषा में और अधिक निपुण हो जाता है।

इकाई 1 - वाक्यपदीयम् ब्रह्मकाण्डम् (आदितः पञ्चाशत्श्लोकाः) 14

''शब्दतत्व निर्देशः'' इत्यतः ''शब्दार्थस्वरूपे ज्ञानरूपदृष्टान्तः पर्यन्तम्

इकाई २- वाक्यपदीयम् ब्रह्मकाण्डम् (एकपञ्चाशत्तः - शतं श्लोकाः) 14

''शब्दे भागवृत्तिताण्डभाव इव'' इत्यतः ''प्रतिबिम्बं न पदार्थान्तरम्'' पर्यन्तम्

इकाई ३- वाक्यपदीयम् ब्रह्मकाण्डम् (एकशततः - अंतपर्यन्तम्) 14

''शब्दवाक्यानां कालभेदो नादभेदात्'' इत्यतः ''स्मृतिनामं वेदमूलकत्वं'' पर्यन्तम्

इकाई 4- विश्रुतचरितम् (पूर्वार्धः) (दशकुमारचरितम् - अष्टमोच्छ्वासः) 9

इकाई 5- विश्रुतचरितम् (उत्तरार्धः) (दशकुमारचरितम् - अष्टमोच्छ्वासः) 9

१ . **वाक्यपदीयम्** - सम्पाकः- डॉ. शिवशंकर अवस्थी।
प्रकाशकः– चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

2. **वाक्यपदीयम्** - आ० पं. सत्यनारायण खण्डूड़ी
चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी-

3. **विश्श्रुतचरितम्** (दशकुमारचरितम् - अष्टमोच्छ्वासः)
प्रकाशकः - मोतीलाल बनारसी

3. **विश्रुत्तचरितम्** - डॉ शशिशेखर चतुर्वेदी - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

एम. ए.पाठ्यक्रमस्य द्वितीयसत्रम्

षष्ठपत्रम् – Comnication Technology

MV-SEC1-206 (1) Credit-2

पूर्णाङ्काः - १००
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः- ७०
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः- ३०
समयः–होरात्रयम्

Objectives

The course helps the participants to,

- Understand the concept and purpose of Communication Technology
- Communicate with email by their own
- Join and organize online academic events
- Search the contents through Google and so
- Access various E-Resources to develop intelligence

Unit I	Introduction to Communication technology Definition, Types, Purpose and Input methods for Indian Languages/Scripts	(10 hours)
Unit II	Email Communication Gmail and Zimbra – How to create and use	(4 hours)
Unit III	Web Conference and Tools Google Meet, Google Classroom, Zoom – including live streaming	(6 hours)
Unit IV	Internet Search Google, YouTube, Blog	(10 hours)
Unit IV	E-Resources E-Dictionaries, E-Books, E-Learning, Wiki for Indian Languages	(10 hours)

Outcomes

After completing the course, the learners will be able to

- Type Indian Script/s by using variousInput methods
- Send and arrange emails
- Schedule and/or Join web conferences
- Search the contents through Google and so
- Access various E-Resources

अथवा

षष्ठपत्रम्- योगचिकित्सा-२

MV-SEC1-206 (2) Credit-2

उद्देश्य :

- भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धति के समन्वित् स्वरूप का बोध कराना ।
- समन्वित चिकित्सा पद्धति के व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगो का निदान।
- योग, आयुर्वेद, पञ्चकर्म, षट्कर्म, नेचुरोपैथी, आहार चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, एक्यूपंचर, एक्यूप्रेशर एवं फिजियो थैरेपी जैसे समन्वित् भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धतियों के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक बोध द्वारा योग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्तित्व का निर्माण करना।

परिणाम :

- समन्वित चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षित विद्यार्थी समाज में साध्य-असाध्य रोगों से पीडित रोगियों को उपचार देकर उन्हें सम्पूर्ण आरोग्य का लाभ प्रदान करता है एवं भारतीय पुरातन चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है ।
- सेवा निष्ठ आजीविका का आलम्बन लेकर स्वयं आत्मनिर्भर होता हुआ अन्यों को भी रोजगार परख सेवा क्षेत्र में नियोजित करता है, उपकार परख उपचार की एक स्वस्थ परम्परा का संवाहक बनकर समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के मार्ग पर अग्रसर करता है ।

इकाई 1-मिट्टी चिकित्सा, सूर्य चिकित्सा

इकाई 2- जल चिकित्सा (हाइड्रोथेरेपी)

इकाई 3- मसाज के विविध प्रकार एवं प्रयोग

इकाई 4- प्राकृतिक चिकित्सा (नैचुरोपैथी)

इकाई 5- वैकल्पिक चिकित्सा एवं षट्कर्म

पाठ्यपुस्तकम्-

समग्र उपचार, प्रकाशन- द्विव्य प्रकाशन, द्विव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार।

अथवा

षष्ठपत्रम्- योगविज्ञान (प्रयोगात्मक)

MV-SEC1-206 (3) Credit-2

Objectives:

Following the completion of the course, students shall be able to:

- State techniques, health benefits, applications, precautions and contraindications ofundermentioned yogic practices;
- To demonstrate and instruct undermentioned yogic practices.

Outcomes-

- Students can perform and get benefited by yoga practions.
- Students can teach the proper praction to the masses.

Unit-I: Yogasana (Sitting Postures)

Dandasana, Swastikasana, Padmasana. Vajrasana, SuptaVajrasana, Kagasana, Utkatasana. Gomukhasana, Ushtrasana, Shashankasana, Janusirasana, Paschimottanasana, Bhramacharyasana, Mandukasana, Utthana, Mandukasana, Vakrasana, ArdhaMatsyendrasana, Marichayasana, Simhasana.

YOGASANAS (STANDING POSTURES]
Tadasana, Vrikshasana, Urdhva-Hastottanasana, Kati Chakrasana; ArdhaChakrasana, PaadaHastasana; Trikonasana, ParshvaKonasana; Veerabhadrasa

Prone Lying Asanas
Makarasana, Markatasana, Bhujangasana (1,2,3,4), Shalabhasana, Dhanurasana, Purnadhanurasana, Chakrasana, ViparitNaukasana.

Unit-II: Pranayama (With Antar&Bahyakumbhaka)
Bhastrika, Kapalbhati, Bahya, Ujjai, Anulom-Vilom, Bhramari, Udgeeth and Pranav as recommended by Swami Ramdev.

Unit-III Mudra-
Hasta Mudra: Chin, Jnana, Hridaya, Bhairav, Vayu, Pran, Apan, Apanvayu, Shankh, Kamajayi.

Unit-IV: SHATKARMAS
Dhauti, Basti, Neti, Nauli, Tratak, Kapalbhati.

Unit-V: MEDITATION
PatanjaliDdhyan.

Continuous Evaluation by the Teachers

TEXT BOOKS

1. Yogrishi Swami RamdevJi: Pranayama Rahasya, DivyaPrakashan, Haridwar, 2009
2. Science Studies Pranayam: Patanjali Research Foundation, Haridwar, 2011
3. AcharyaBalkrishna: YogVijnanam, DivyaPrakashan, 2017.
4. Yogrishi Swami RamdevJi: Vedic NityakarmaVidhi, DivyaPrakashan, Haridwar, 2010

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य तृतीयसत्रम्

प्रथमपत्रम् - महाभाष्यम् (तृतीयाध्यायः)

MV-CT-301 Credit-4

पूर्णाङ्काः - १००
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः- ७०
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः- ३०
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- सनन्त, नामधातु, यङन्त, णिजन्त एवं अयादि धातुओं का बोध ।
- आख्यात में प्रयुक्त होने वाले विकरण प्रत्यय तथा धातु से प्रयुक्त कृत् एवं कृत्य प्रत्ययों का बोध ।
- कर्म एवं सुबन्त उपपद रहते धातुओं से प्रत्यय विधान तथा भूत एवं वर्तमान काल में निर्दिष्ट प्रत्ययों का बोध ।
- उणादि तथा कर्ताभिन्नकारक संज्ञा भाव में विहित प्रत्ययों एवं खलर्थ प्रत्ययों का बोध ।
- कालातिदेश में विहित प्रत्यय लिङ् लोट् एवं तुमुन् आदि प्रत्ययों का बोध ।
- क्त्वा और णमुल प्रत्यय विषयक बोध तथा अनेक विषयों के विधि सूत्रों का बोध ।

परिणाम-

- इस प्रकरण में विद्यार्थी सनन्त, यङन्तादि धातुओं के बारे में सूक्ष्मता से अध्ययन करके तत् तत् विषय में निःशंक होकर वाक्यों में प्रयोग करता है।
- इसमें धातुओं से होने वाले सभी प्रमुख प्रत्ययों का विस्तृत विवेचन होने से विद्यार्थी सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय को सरलता से समझकर उसका समाज में उपदेश करके समाज को निर्भ्रान्त बनाता है।
- 'उणादयो बहुलम्' इस सूत्र का अध्ययन करके विद्यार्थी औणादिक शब्दों की निष्पत्ति आसानी से करने में समर्थ हो जाता है।
- इन सभी प्रकरणों के अध्ययन के पश्चात् कर्ता, कर्म, करण आदि साधनों को जानकर वाक्यों में प्रयोग करता है।

व्याकरणमहाभाष्यम् ७०

इकाई-1 (तृतीयाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-1, 2) **१४**

प्रत्ययः (3.1.1)- हेतुमति च (3.1.26)

इकाई-2 (तृतीयाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-3, 4) **१४**

कण्ड्वादिभ्यो यक् (3.1.27)- लिङ्याशिष्यङ् (3.1.86)

इकाई-3 (तृतीयाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-5, 6) **१४**

कर्मवत् कर्मणा.... (3.1.87)- प्रसूल्वः समभिहारे वुन् (3.1.149)

इकाई-4 (तृतीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः) (आह्निक-1, 2, 3) **१४**

कर्मण्यण् (3.2.1)- मतिबुद्धिपूजार्थे.... (3.2.188)

इकाई 5 (तृतीयाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ) **१४**

उणादयो बहुलम् (3.3.1)- आर्धधातुकं शेषः (3.4.114)

सहायकग्रन्थाः-

१. व्याकरणमहाभाष्यम्:- महर्षिपतंजलिविरचितम्
प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, ३८ यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

२. व्याकरणमहाभाष्यम्:- व्याख्याकारः- डॉ॰ सुद्युम्न आचार्य
प्रकाशकः- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

३. व्याकरणमहाभाष्यम्:- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री
प्रकाशकः- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा।

प्रश्नपत्रविषयका निर्देशाः

(क) पृष्टेषु पञ्चसु त्रयः प्रश्नाः समाधेयाः (४५) (ख) पृष्टेषु अष्टासु पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः (२५)

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य तृतीयसत्रम्

द्वितीयपत्रम्- महाभाष्यम् (चतुर्थाध्यायः)

MV-CT-302 Credit-4

पूर्णाङ्काः - १००
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः- ७०
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः- ३०
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- स्वादि एवं तद्धित प्रत्ययों की प्रकृति तथा स्त्रीप्रत्ययों का बोध ।
- तद्धित के अधिकार में अपत्यार्थ, चातुरर्थिक, शैषिकार्थिक तथा अन्य प्रत्ययों का बोध।

परिणाम-

- इसके अध्ययन से छात्र स्वादि एवं तद्धित प्रत्ययों के साथ स्त्रीलिङ्ग प्रत्ययों का प्रयोग कर पाता है।
- तद्धित प्रत्ययान्त शब्दों को पहचान लेता है।
- अपत्यार्थ आदि अर्थों के बोध से तदर्थक शब्दों का निर्माण करके संस्कृत सम्भाषण के सौष्ठव में वृद्धि करता है।

व्याकरणमहाभाष्यम्

इकाई-1 (चतुर्थाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-1) **१४**

ङ्याप्प्रातिपदिकात् (4.1.1)- अनुपसर्जनात् (4.1.14)

इकाई-2 (चतुर्थाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-2) **१४**

टिड्ढाणञ्द्वयसज्.......(4.1.15)- गोत्रावयवात् (4.1.76)

इकाई-3 (चतुर्थाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-3, 4) **१४**

समर्थानां प्रथमाद् वा (4.1.82)- अतश्च (4.1.177)

इकाई-4 (चतुर्थाध्यायस्य द्वितीयः पादः) (आह्निक-1, 2) **१४**

तेन रक्तं रागात् (4.2.1)- वृद्धादकेकान्तखोपधात् (4.2.141)

इकाई-5 (चतुर्थाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ) **१४**

युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां.....(4.3.1)- वसोः समूहे च (4.4.140)

सहायकग्रन्थाः–

१. व्याकरणमहाभाष्यम्:- महर्षिपतंजलिविरचितम्

प्रकाशकः– चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, ३८ यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

२. व्याकरणमहाभाष्यम्:- व्याख्याकारः- डॉ॰ सुद्युम्न आचार्य

प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

३. व्याकरणमहाभाष्यम्:- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री

प्रकाशकः– हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा।

प्रश्नपत्रविषयका निर्देशाः

(क) पृष्टेषु पञ्चसु त्रयः प्रश्नाः समाधेयाः (४५)

(ख) पृष्टेषु अष्टासु पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः (२५)

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य तृतीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः - १००
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः- ७०
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः- ३०
समयः-होरात्रयम्

तृतीयपत्रम्- महाभाष्यम् (पञ्चमाध्यायः)

MV-CT-303 Credit-4

उद्देश्य-

- तद्धित के अधिकार में विहित आर्हीयार्थिक तथा भाव एवं कर्म में विहित त्वतल् आदि प्रत्ययों का बोध।
- संख्या वाचियों से पूरण अर्थ में विहित, मतुप् अर्थों में विहित तथा अन्य अर्थों में विहित प्रत्ययों का बोध ।
- विभक्ति संज्ञक, आतिशायिक, स्वार्थिक, समासान्त तथा अन्य अर्थों में विहित प्रत्ययों का बोध ।

परिणाम-

- संस्कृत भाषा में प्रचलित अनेक प्रकार के तद्धित प्रत्ययान्त शब्दों को जानकर वाक्यों में प्रयोग करता है।
- छात्र संस्कृत भाषा के लेखन, सम्भाषण और अध्ययन में निष्णात होकर लघुशोधन लेखन आदि में प्रवृत्त होता है।
- इनके अध्ययन से व्याकरण शास्त्र की निर्माण विधि को जानकर उसका प्रबोधन देता है।

व्याकरणमहाभाष्यम् ७०

इकाई-1 (पञ्चमाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-1) **१४**

प्राक् क्रीताच्छः (5.1.1)- संख्यायाः संज्ञासङ्घ.....(5.1.58)

इकाई-2((पञ्चमाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-2) **१४**

पंक्तिविंशतित्रिं.....(5.1.59)- हायनान्तयुवादि... (5.1.130)

इकाई-3 (पञ्चमाध्यायस्य द्वितीयः पादः) (आह्निक-1) **१४**

विभाषा तिलमाषो.... (5.2.4)- क्षेत्रियच् परक्षेत्रे... (5.2.92)

इकाई-4 (पञ्चमाध्यायस्य द्वितीयतृतीयपादौ) (आह्निक-2.2 ,3.1) **१४**

तदस्यास्त्यस्मिन् ....(5.2.94)- एकादाकिनिच्चा.... (5.3.52)

इकाई-5 (पञ्चमाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ) (आह्निक-3.2 , 4.1) **१४**

अतिशायने तमब्..... (5.3.55)- ईयसश्च (5.4.156)

सहायकग्रन्था :–

१. व्याकरणमहाभाष्यम्:- महर्षिपतंजलिविरचितम्
प्रकाशक :– चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, ३८ यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

२. व्याकरणमहाभाष्यम्:- व्याख्याकार :- डॉ॰ सुद्युम्न आचार्य
प्रकाशक :– रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

३. व्याकरणमहाभाष्यम्:- सम्पादक :- श्री वेदव्रत शास्त्री
प्रकाशक :– हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा।

प्रश्नपत्रविषयका निर्देशा :

(क) पृष्टेषु पञ्चसु त्रयः प्रश्नाः समाधेयाः (४५)

(ख) पृष्टेषु अष्टासु पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः (२५)

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य तृतीयसत्रम्

चतुर्थपत्रम्- धातुवृत्तिः (भ्वादिर्गणः)

MV-CT-304 Credit-4

पूर्णाङ्काः - १००
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः- ७०
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः- ३०
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- आचार्य सायण विरचित धातुवृत्ति ग्रन्थ के माध्यम से भ्वादिगण में स्थित धातुओं का विविध प्रक्रियाओं में बोध प्रदान करना।

परिणाम-

- इसके अध्ययन से संस्कृत भाषा में प्रचलित सम्पूर्ण तिङन्त पदों का ज्ञान होता है।
- धातुवृत्ति के अध्ययन से सम्पूर्ण तिङन्त प्दों की सिद्धि को सीखकर संस्कृत संभाषण में अति-उत्कृष्ट धातुरूपों का प्रयोग करता है।

धातुवृत्ति (भ्वादिगणः)-

इकाई-1

भू, सत्तायाम् (1.1)- एजृ कम्पने (1.143)

इकाई-2

टुओस्फूर्जा, वज्रनिर्घोषे- (1.144)- पन, च (1.299)

इकाई-३

भाम, क्रोधे- (1.300)- तूष, तुष्टौ (1.452)

इकाई-४

पूष, वृद्धौ- (1.453)- शद्लृ, शातने (1.594)

इकाई-५

क्रुश, आह्वाने रोदने च.....- (1.595)- टुओश्वि, गतवृद्ध्योः..... (1.736)

सहायकग्रन्थाः–

१- माधवीय धातुवृत्तिः - सम्पादकः- विजयपालो विद्यावारिधिः।
प्रकाशकः– १- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

प्रश्नपत्रविषयका निर्देशाः

(क) पृष्टेषु सप्तसु पञ्चानां धातूनां कर्तरि लिटि, लोटि, लुड़ि च रूपाणि लेखनीयानि। १०
(ख) पृष्टेषु सप्तसु पञ्चानां धातूनां कर्मकर्तरि ,सनि कर्तरि च लटि, लुटि, लुड़ि च प्रथम पुरुषैकवचने रूपाणि लेखनीयानि। १०
(ग) पृष्टेषु सप्तसु पञ्चानां धातूनां यड़ि, लुकि च कर्तरि लटि, लोटि,लुड़ि च मध्यम पुरुषैकवचने रूपाणि लेखनीयानि। १०
(घ) पृष्टेषु सप्तसु पञ्चानां धातूनां णिचि, कर्तरि कर्मणि च लटि, लुटि,लुड़ि च प्रथमपुरुषैकवचने रूपाणि लेखनीयानि। १०
(ड़) पृष्टेषु सप्तसु पञ्च प्रयोगाः सुसाध्याः। २०
(च) पृष्टेषु अष्टासु पञ्चानां शब्दानां द्वयोः वाक्ययोः प्रयोगः करणीय । १०

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य तृतीयसत्रम्

पञ्चमपत्रम्- परिभाषेन्दुशेखरः चम्पूकाव्यं च

MV-GE-305 (1) Credit-4

पूर्णाङ्काः - १००
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः- ७०
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः- ३०
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य

- परिभाषेन्दुशेखर के माध्यम से व्याकरण महाभाष्य में प्रयुक्त परिभाषाओं से अवगत कराना।
- काव्य ज्ञान व भाषा के सामर्थ्य का विकास कराना।

परिणाम -

- महाभाष्य में प्रयुक्त होने वाली परिभाषाओं के विस्तृत ज्ञान से व्याकरण शास्त्र का निर्भ्रान्त ज्ञाता हो जाता है।
- संस्कृतभाषा में और अधिक निपुणता को हासिल करता है।

इकाई १ - परिभाषेन्दुशेखरः १४
शास्त्रत्वसम्पादनोद्देशं नाम प्रथमं प्रकरणम्

इकाई २ - परिभाषेन्दुशेखरः १४
बाधबीजं नाम द्वितीयं प्रकरणम्

इकाई ३ - परिभाषेन्दुशेखर १४
शास्त्रशेषं नाम तृतीयं प्रकरणम्

इकाई ३ - चम्पूकाव्यम् ०९
नलचम्पू (प्रथमोच्छ्वासः 1-25)

इकाई ४ - चम्पूकाव्यम् ०९
नलचम्पू (प्रथमोच्छ्वासः 26-50)

पाठ्यपुस्तकम्-

1. **परिभाषेन्दुशेखर** - आचार्य विश्वनाथ मिश्र
   चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन।
2. **नलचम्पू** - प० परमेश्वरदीन पाण्डेय
   चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ।

अथवा

भाषा विज्ञानम्

MV-GE-305 (2) Credit-4

प्रस्तावित पाठ्यक्रमः (Prescribed Course)

खण्ड- 1 (Section-1) भाषा विज्ञानम्

खण्ड- 2 (Section-2) लघुसिद्धान्त कौमुदी

खण्ड- 3 (Section-3) संगणक विज्ञानम्

पाठ्यक्रमोद्देश्यम्- अस्य पत्रस्य लक्ष्यं संस्कृत भाषा विज्ञाने नैपुण्यं संस्कृत व्याकरणे च गतिः तथैव संगणक विषयेऽपि प्रवेशः।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणामः (Course Outcomes)

- अस्य पत्रस्याध्ययनेन छात्राः भाषा विषयकं तुलनात्मकं ज्ञानं प्राप्स्यन्ति।
- भाषा विज्ञानस्य ज्ञानार्थं संस्कृत व्याकरणध्ययनम् आवश्यकं भवति तद् प्रयोजनमपि सेत्स्यति।
- व्याकरणेन सह संगणकस्यापि विशिष्टं महत्त्वमस्ति, तद् ज्ञानमपि प्राप्तुं छात्राः समर्थाः भविष्यन्ति।

घटकानुसार विभागः (Unit-Wise-Division)

खण्ड-1 (Section-1) भाषा विज्ञानम्

घटक (Unit) - 1 भाषायः परिभाषा, उत्पत्तिः, विकासश्च। भाषापरिवर्तनं तद्भेदाश्च। भाषापरिवर्तनस्य कारणानि। भाषापरिवारः। भारोपीयपरिवारस्य भाषागताः प्रमुखाः शाखाः तद्वैशिष्ट्यानि च। परिवारमूलकम् आकृतिमूलकं च भाषाणां वर्गीकरणम्। संस्कृतभाषा वैदिकी लौकिकी च।

घटक (Unit) - 2 अर्थ विज्ञानम्- अर्थ परिवर्तनस्य कारणानि दिशश्च

घटक (Unit) - 3 भाषाविज्ञानेतिहासः- प्राचीनः भाषावैज्ञानिकाः पाणिनिः, पतञ्जलिः, भर्तृहरिः, यास्कः, भाषाविज्ञान- व्याकरण-निरूक्तानां परस्पर सम्बन्धः।

खण्ड (Section-2) व्याकरणम्

घटक (Unit) - 1 सन्धि प्रकरणम्

घटक (Unit) - 2 कारक प्रकरणम्

घटक (Unit) - 3 समास प्रकरणम्

खण्ड (Section- 3) संगणक विज्ञानम्

घटक (Unit) - 1 DBMS (Database Management system), Web Technology (HTML), Programming Language (C) म् इत्येषां सामान्यपचियोऽनुप्रयोगश्च।

घटक (Unit) - 2 Digital पुस्तकालयस्य परिचयः, टङ्कणाभ्यासः (यूनिकोडफॉण्ट-माध्यमेन)

संस्तुतग्रन्थाः-

1. भाषाविज्ञानम्- कर्णसिंहः।
2. सामान्य भाषा-विज्ञान-बाबूराम सक्सेना।
3. भाषा और भाषिकी, देवीशंकर द्विवेदी, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़।
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी- (वरदराज), भैमीव्याख्या- व्याख्याकार भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।

अथवा

स्वर्णिमकाल का इतिहास-1

MV-GE-305 (3) Credit-4
Guptas: The Golden Period of Indian History

Course Objectives-

The main objective of this paper is to understand historical processes between 3rd Century AD and 6th Century AD. Though the chronology of the paper starts at 3rd Century AD, an initial background is given starting from thst post Mauryan period starting with the Gupta and ending with post Gupta scenario,

Course Outcome:

The paper ensures that the students learn the changes in political, social, economic and cultural scenario happening during this chronological span. It will also teach them how to study sources to the changing historical processes.

Unit I: Political History of Gupta Period (12 Lect.)

Origin and development of Gupta Dynasty, Early History of Guptas- ShriGupt and Ghatotkach, Founder of the great Gupta Dynasty- Chandragupta I, Achievements of Samudragupta, Mighty, Virtuous, Digvijayi and the great Gupta king who presented the concept of Greater India.

Unit II: Political History of Gupta Period (11 Lect.)

Achievements ChandrguptaVikramadity, Kumargupta and his successor- Skandgupta, Budhgupta and Decline of the Imperial Guptas, Government and functions of the Council of Ministers during the Gupta period, Officials of the Gupta empire.

Unit III: Social status in GuptaPeriod (12 Lect.)

Social system - Varna system, institution of marriage, types of marriage, status of women, rights of women in property, widow marriage, clothes and jewellery, clothes of sanyasins, social life, AtithiSatkar, means of entertainment.

Unit IV: Economic system of Gupta period – **(11 Lect.)**

Development of agriculture, use of new sources of irrigation, development of industries, development of means of transport, banking system, economic standard of living of common people, urban and rural life.

Unit V: Education system in Gupta period (14 Lect.)

Education system, Gurukul education system, Buddhist education system, Centre of Education- KashiTaxila, Nalanda, Valabhi. Guru-Shishya relationship, curriculum, qualification of the Guru, qualification of the Shishya, rules of admission in Gurukul, women's education, development of writing skills, writing material.

Recommended Readings:

Pandey, V.C. Prachin Bharat kaRajnitikTathaSanskritikItihas, 2 Parts, Central Book Dipo Allahabad,
Sharma, L.P.: History of Ancient India,
Raychoudhury, H.C., PrācīnBhārataKāRājanītikaItihāsa (Hindi), Allahabad,
Singh, U., A History of Ancient and Early Medieval India, From The Stone Age To The 12th Century, Delhi 2016
Basham A. L. The Wonder that was India, London
Srivastava, K. C., Prachin Bharat kaItihasTathaSanskriti, Allahabad, 2019

Majumdar, R.C. and A.S. Altekar, The Gupta-Vakataka Age (Also in Hindi), Chapters 1, 11 and 14, London, 1946.
Majumdar, R.C. and A.D. Pusalker (eds.), The History and Culture of the Indian People, Vols. III and IV (relevant chapters), Bombay, 1988 and 1980. Lucknow, 1973.
Ray, H.C., Dynastic History of North India, Delhi, 1960.
Tripathi, R.S., Ancient India (English and Hindi), Delhi, 1960.
Tripathi, R.S., History of Kannauj to the Moslem Conquest, Delhi, 1959.
Upadhyaya, Vasudeo, Gupta SamrajyaKaItihasa (Hindi), Prayag, 1939.

एम.ए. पाठ्यक्रमस्य तृतीयसत्रम्

षष्ठपत्रम्- भारतीय संगीत (गायन)

Paper Name– THEORY AND PRACTICAL OF VOCAL

पूर्णाङ्काः - १००
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः- ७०
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः- ३०
समयः-होरात्रयम्

MV-SEC2-306 (1) Credit-2

Objective:-

Theory-

This module is prescribed to appraise to learn the theoretical knowledge of Sangeet its Basic's , Alankaar , Aroh Avroh Pakad, Lakshan geet.

Origin of Music Alankaar according to Bhatkhande swarlipi Paddhati,Bhajan UOP Koolgeet etc.

Practical-

Student Can able to practice Khadaj Swar , AUM in proper Musical Way, Twenty Alankaar's, one chota khayal Madhya Laya in Raag – Bhairav.

Outcome-

Got the Knowledge to Sing Basic Swar's , Alankaar's , Bhajan's, Swastivachan Mantra , Patriotic Songs, Raag Bhairav Chhota khayal in a Classical way.

THEORY

UNIT- I Definitions :- Sangeet, Dhwani , Nada , Swara , Saptak , Alankar, Laya , Sama, Taal , Vadi, Samvadi , Vivadi , Anuvadi, Aroh , Avroh , Pakad, Khayal , Sthai , Antra, Thaat & its Names , Raag, Alaap, Jaati , Bhajan, Lokgeet, Lakshan Geet , Thumri. Brief Parichay of Raag Bhairav.

UNIT- II Origin of Sangeet , Origin of Sound, Twenty Alankars According to Kramik Pustak Malika, Swarlipi Paddhati of Vishnu Narayan Bhatkhande & Vishnu Digambar Palushkar , Relation Between Life & Music, UOP (Koolgeet, Yagya Prarthna) , Five Swastivachan Mantra Two Patriotic Song , Three Arya Samaj Bhajan, Biography of Musician Tansen.

PRACTICAL

UNIT- III - Practice of Twelve Swar in Saptak, Practice of om in Khadaj swar, Twenty Alakaarr according to Kramik pustak Malika-I, Practice of one Chota Khyal in Raag Bhairav in Madhya Laya. Two Taan in Raag Bhairav.

UNIT-IV- Practice of Koolgeet, Yagya Prarthna, Five Swastivachan Mantra, Two Patriotic Song, Three Arya Samaj Bhajan with two Sargam each in Related Bhajan, One Hori Song.

अथवा

षष्ठपत्रम्- भारतीय संगीत (वादन)

Paper Name– THEORY AND PRACTICAL OF INSTRUMENTAL

MV-SEC2-306 (2) Credit-2

Objective-

This module is prescribed to learn basic Structure of Harmonium, Tabla Some Definitions Related to Swar & Taal.

Practical :- Can Able to Practice UOP koolgeet Patriotic Song & Bhajan's On Harmonium .

Can Able to Practice Kayda in Teentaal , Bols in Dadra & Kehrwa.

UNIT- I- Harmonium- Structural knowledge of Harmonium, Theoretical knowledge of Twelve Swar in Saptak

UNIT- II- Tabla – Structural knowledge of Tabla,

Basic Definitions:- Mantra, Vibhayg, Laya, Sama, Khali, Writing knowledge of Taal:- Dadra, Kehrwa, Teentaal in Thah & Dugun.

PRACTICAL

UNIT- III- Harmonium- Practice of UOP Koolgeet, Yagya Prarthnas, five Swastivachan, One Patiotic song, Three Arya Samaj Bhajan.

UNIT-IV- Tabla – Two Kayda in Teental, Practice skill in Dadra and Kehrwa.

Outcome-

Got the Knowledge to play Bhajan's, UOP koolgeet , Swastivachan mantra , yagya prarthna on Harmonium.

Tabla :- Abled to play kayda in Teentaal , Dadra & kehrwa.

Recommended Books:-

1. Sangeet Rachna Ratnakar Part -1 - Rajkishor Prasad Sinha(Author)
2. Raag Parichaya Part -1 – Harishchandra Srivastava(Author)
3. Sangeet prasnottar Part-1
4. Taal Parichaya -1- Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
5. Adarsh Tabla Prashnotari Part-1- Dr. Rubi Shrivastava
6. Sangeet Praveshika- Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
7. Kramik Pushtak Mallika Part -1 – V. N. bhatkhande
8. Also Books Recommended by Teacher.

अथवा

षष्ठपत्रम्- सस्वरवेदपाठः

MV-SEC2-306 (3) Credit-2

उद्देश्य-

- वेदों की रक्षा करना।
- वेद, वेदो का विषय और वेदों के ऋषियों से लाभान्वित् होगें।
- वेद पाठ के हर प्रकार के पाठों से अवगत् कराना।
- अक्षरों(वर्णो) उच्चारण का सम्यक बोध कराना।

ईकाई-१

i. वैदिक वाङ्मय परिचय

ii. वेदो के ऋषियों, छन्द एवं देवताओं के स्वरूप का परिचय।

iii. वेदों के मुख्य विषयों का परिचय।

iv. वेद पाठ के आठ प्रकार के पाठों (जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वजा, दण्ड, रथ, घन)से अवगत कराना।

v. मुख्य सूक्तों का परिचय (अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी, बृहस्पति, स्वस्तिवाचन, पुरुषसूक्त, नासदीयसूक्त, शान्तिकरण श्रद्धा, संगठन एवं दिनचर्या मन्त्रों का सस्वर उच्चारण)

ईकाई-२

i. ऋग्वेदीय अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।

ii. पुराने पाठ का आवृत्ति।

ईकाई-३

i. पुरुष सुक्त नासदीय सूक्त, बृहस्पति सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।

ii. पुराने पाठ का आवृत्ति।

ईकाई-४

i. कृष्ण युजर्वेदीय तैत्तीरीय आरण्यक मंत्रपुष्पम् का परिचय।

ii. पुराने पाठ का आवृत्ति।

iii. मन्त्रपुष्पम् का पाठ एवं कण्ठस्थ अर्थ सहित व्याख्या।

iv. स्वस्तिवाचन शांतिकरण एवं दिनचर्यामंत्रो का सस्वर उच्चारण।

v. संगठन सूक्त के प्रतिदिन एक-एक मंत्र का अर्थ बोध।

परिणाम-

- वेद पाठ के प्रकारों (पाठों) का बोध होगा।
- अग्नि,वायु, सस्वर, पाठ एवं अर्थ बोध।
- वैदिक वाङ्मय के विषय मे ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- एकाग्रता बढ़ती है, सात्विक हारमोन्स पैदा होने से अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञान का एवं आनन्दमय अस्तित्व पुष्ट एवं प्रसन्न होता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक-वैदिक सुक्त मञ्जरी, मुद्रक-ऋषि ऑफसैट प्रिन्टर्स, ज्वालापुर हरिद्वार।

एम. ए.पाठ्यक्रमस्य चतुर्थसत्रम्

पूर्णाङ्काः - १००
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः- ७०
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः- ३०
समयः-होरात्रयम्

प्रथमपत्रम् - महाभाष्यम् (षष्ठाध्यायः)

MV-CT-401 Credit-4

उद्देश्य :

- धातु को द्वित्व, सम्प्रसारण, आकारादेश एवं संहिता के अधिकार में विहित सन्धि एवं अन्य कार्यो का बोध ।
- उदात्त, स्वरित एवं अनुदात्त स्वर सम्बन्धि बोध ।
- उत्तरपद के रहते अलुग् तथा अन्य कार्यो का बोध ।
- अङ्ग के अधिकार में निर्दिष्ट दीर्घ, असिद्धवत् आर्धधातुक विषयक तथा भसंज्ञा सम्बन्धि कार्यो का बोध

परिणाम-

- सन्धियों का विस्तृत प्रकरण यहाँ विद्यमान है। जिनके ज्ञान से शास्त्रों में प्रयुक्त सन्धि युक्त शब्दों को अतीव सरलता से समझने में समर्थ हो जाता है।
- उदात्त, अनुदात्त, स्वरित स्वरों से सम्बद्ध एक विस्तृत प्रकरण का बोध प्राप्त कर वह स्वरों के विज्ञान को समझने में सक्षम हो जाता है।
- शब्द निर्माण प्रक्रिया में दीर्घ तथा अङ्गाधिकार कार्यो को करने में कुशल हो जाता है।
- भस्य अधिकार में, टिलोपादि, आदेश विधि तथा प्रकृतिभाव को जानने में समर्थ हो जाता है।

व्याकरणमहाभाष्यम् ७०

इकाई-1 (षष्ठाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-1, 2, 3) **१४**

एकाचो द्वे प्रथमस्य (6.1.1)- भय्यप्रवय्ये चच्छन्दसि (6.1.83)

इकाई-2 (षष्ठाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक- 4, 5, 6) **१४**

एकः पूर्वपरयोः (6.1.84)- समासस्य (6.1.223)

इकाई-3 (षष्ठाध्यायस्य द्वितीयतृतीयपादौ) **१४**

बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् (6.2.1)- सम्प्रसारणस्य (6.3.139)

इकाई-4 (षष्ठाध्यायस्य चतुर्थः पादः) (आह्निक-1, 2) **१४**

अङ्गस्य (6.4.1)- विभाषापः (6.4.57)

इकाई 5 (षष्ठाध्यायस्य चतुर्थः पादः) (आह्निक-3, 4) **१४**

स्यसिच्सीयुट्तासिषु.... (6.4.62)- दाण्डिनायनहास्ति..... (6.4.174)

सहायकग्रन्थाः–

१. व्याकरणमहाभाष्यम्:- महर्षिपतंजलिविरचितम्
प्रकाशकः– चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, ३८ यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

२. व्याकरणमहाभाष्यम्:- व्याख्याकारः- डॉ॰ सुद्युम्न आचार्य
प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

३. व्याकरणमहाभाष्यम्:- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री
प्रकाशकः– हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा।

प्रश्नपत्रविषयका निर्देशाः

(क) पृष्टेषु पञ्चसु त्रयः प्रश्नाः समाधेयाः (४५) (ख) पृष्टेषु अष्टासु पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः (२५)

एम. ए.पाठ्यक्रमस्य चतुर्थसत्रम्

द्वितीयपत्रम्- महाभाष्यम् (सप्तमाध्यायः)

MV-CT-402 Credit-4

पूर्णाङ्काः - १००
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः- ७०
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः- ३०
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- तिङ् तथा सुप् प्रत्ययों को आदेश एवं आगमों के विधान का ज्ञान ।
- परस्मैपदपरक वृद्धि, आर्धधातुक प्रत्ययों को इट् निषेध, इट् विधि, तथा युष्मद् अस्मद् इत्यादि सर्वनाम शब्दों को विभक्ति के परे रहत कार्यों के विधान का बोध ।
- पूर्वोत्तरपद वृद्धि, धातु एवं विभक्ति सम्बन्धी विविध कार्यों का बोध ।
- धातु एवं अभ्यास सम्बन्धि विविध कार्यों का ज्ञान ।

परिणाम-

- सम्पूर्ण सप्तमाध्याय में विधि सूत्रों का संग्रह है अर्थात् शब्दों की सिद्धि में जो विधान होते हैं उनका ज्ञान यहाँ से विस्तृत रूप में प्राप्त हो जाता है और वह शब्दों के स्वरूप को समझाने में समर्थ हो जाता है।
- इस अध्याय में सुबादेश, नुमागम इडागम तथा वृद्धि आदि विधियों का विशिष्ट रूप से बोध कराने में समर्थ हो जाता है।
- गुणादेश तथा अभ्यास सम्बन्धित विशिष्ट कार्यों को प्रकृष्ट रूप से अभिव्यक्त करता है।
- युष्मद् अस्मद् आदि सर्वनाम शब्दों के निर्माण में निपुण हो जाता है।

व्याकरणमहाभाष्यम् ७०

इकाई-1 (सप्तमाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-1,2) १४

युवोरनाकौ (7.1.1)- उदोष्ठ्यपूर्वस्य (7.1.102)

इकाई-2 (सप्तमाध्यायस्य द्वितीयः पादः) (आह्निक-1,2) १४

सिचि वृद्धिः.....(7.2.1)- ईडजनोर्ध्वे च (7.2.78)

इकाई-3 (सप्तमाध्यायस्य द्वितीयतृतीयपादौ) (आह्निक-2.2, 3.1) १४

अतो येयः (7.2.80)- भस्त्रैषाजाज्ञा.....(7.3.47)

इकाई-4 (सप्तमाध्यायस्य तृतीयः पादः) (आह्निक- 2) १४

ठस्येकः (7.3.50)- आङो नास्त्रियाम् (7.3.120)

इकाई-5 (सप्तमाध्यायस्य चतुर्थः पादः) (आह्निक- 1) १४

णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः (7.4.1)- सन्वल्लघुनि चङ्परे....(7.4.96)

सहायकग्रन्थाः–

१. व्याकरणमहाभाष्यम्:- महर्षिपतंजलिविरचितम्
प्रकाशकः– चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, ३८ यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

२. व्याकरणमहाभाष्यम्:- व्याख्याकारः- डॉ॰ सुद्युम्न आचार्य
प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

३. व्याकरणमहाभाष्यम्:- सम्पादकः- श्री वेदव्रत शास्त्री
प्रकाशकः– हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा।

प्रश्नपत्रविषयका निर्देशाः

(क) पृष्टेषु पञ्चसु त्रयः प्रश्नाः समाधेयाः (४५) (ख) पृष्टेषु अष्टासु पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः (२५)

एम. ए.पाठ्यक्रमस्य चतुर्थसत्रम्

तृतीयपत्रम्- महाभाष्यम् (अष्टमाध्यायः)

MV-CT-403 Credit-4

पूर्णाङ्काः - १००
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः- ७०
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः- ३०
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- पदसम्बन्धि द्वित्व पद से उत्तर युष्मद् अस्मद् को आदेश एवं स्वरविषयक बोध ।
- पूर्वत्रा सिद्ध प्रकरण के अन्तर्गत निष्ठा, प्लुत उदात्त एवं संहिता विषयक मूर्धन्य, णत्व इत्यादि विविध कार्यों का बोध ।

परिणाम-

- द्वित्व आदि प्रक्रिया एवं स्वर सम्बन्धि ज्ञान प्राप्त कर वेदमन्त्रों में प्रयुक्त स्वर व्यवस्था को समझाने में समर्थ हो जाता है।
- 'पूर्वत्रासिद्धम्' जैसे विशिष्ट प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्तकर शब्दों की सिद्धि करने में अधिक निपुण हो जाता है।
- संयोगान्तादि लोप विधियों का निष्ठा प्रत्यय सम्बन्धित नत्वादिविधि तथा लुप्तविधि का ज्ञान प्राप्तकर शब्दों की सिद्धि में समर्थ हो जाता है।
- णत्व, श्चुत्व, ष्टुत्व तथा बहुप्रयुक्त सन्धियों का विश्लेषण कर पाता है।

व्याकरणमहाभाष्यम् ७०

इकाई-1 (अष्टमाध्यायस्य प्रथमः पादः) (आह्निक-1, 2) **१४**

सर्वस्य द्वे (8.1.1)- सामान्यवचनं विभाषितं.....(8.1.80)

इकाई-2 (अष्टमाध्यायस्य द्वितीयः पादः) (आह्निक-1) **१४**

पूर्वत्रासिद्धम् (8.2.1)- झषस्तथोर्धोऽधः (8.2.40)

इकाई-3 (अष्टमाध्यायस्य द्वितीयः पादः) (आह्निक-1, 2) **१४**

रदाभ्यां निष्ठातो नः..... (8.2.42)- तयोर्य्वावचि.....(8.2.108)

इकाई-4 (अष्टमाध्यायस्य तृतीयः पादः) (आह्निक-1, 2) **१४**

मतुवसो रु सम्बुद्धौ.....(8.3.1)- सदेः परस्य लिटि (8.3.118)

इकाई-5 (अष्टमाध्यायस्य चतुर्थः पादः) (आह्निक-1, 2) **१४**

रषाभ्यां नो णः.....(8.4.1)- अ अ (8.4.68)

सहायकग्रन्था :-

१. **व्याकरणमहाभाष्यम्:- महर्षिपतंजलिविरचितम्**

प्रकाशक:- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, ३८ यू. ए. बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

२. **व्याकरणमहाभाष्यम्:- व्याख्याकार:-** डॉ॰ सुद्युम्न आचार्य

प्रकाशक:- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

३. **व्याकरणमहाभाष्यम्:- सम्पादक:- श्री वेदव्रत शास्त्री**

प्रकाशक:- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा।

प्रश्नपत्रविषयका निर्देशा :

(क) पृष्टेषु पञ्चसु त्रयः प्रश्नाः समाधेयाः (४५) (ख) पृष्टेषु अष्टासु पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः (२५)

एम. ए.पाठ्यक्रमस्य चतुर्थसत्रम्

चतुर्थपत्रम् - धातुवृत्तिः (अदादि-कण्ड्वादिगणाः)

MV-CT-404 Credit-4

पूर्णाङ्काः - १००
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः- ७०
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः- ३०
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- आचार्य सायण विरचित धातुवृत्ति ग्रन्थ के माध्यम से भ्वादिगण अतिरिक्त गणों में स्थित धातुओं का विविध प्रक्रियाओं में बोध प्रदान करना।

परिणाम-

- अदादिगण से आरम्भ करके कण्ड्वादिगण पर्यन्त धातुओं के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर उनका प्रयोग करने में तथा शास्त्रों में प्रयुक्त शब्दों को समझाने में पूर्णतः समर्थ हो जाता है।
- गणों की धातुओं के विभिन्न कार्यों को जानकर इष्टाथों की संगति करने में समर्थ हो जाता है।
- वैदिक वाङ्मय के शब्दों के अर्थों का विश्लेषण कर पाता है।

धातुवृत्तिः

इकाई-1

अदादिर्गणः

इकाई-2

जुहोत्यादिर्गणः दिवादिर्गणः

इकाई-३

स्वादिर्गणः, तुदादिर्गणः

इकाई-४

रुधादिर्गणः, तनादिर्गणः, क्र्यादिर्गणः

इकाई-५

चुरादिर्गणः, कण्ड्वादिर्गणः

सहायकग्रन्थाः–

१- माधवीय धातुवृत्तिः - सम्पादकः- विजयपालो विद्यावारिधिः।

प्रकाशकः– १- रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

प्रश्नपत्रविषयका निर्देशाः

(क) पृष्टेषु सप्तसु पञ्चानां धातूनां कर्तरि लिटि, लोटि, लुड़ि च रूपाणि लेखनीयानि। १०

(ख) पृष्टेषु सप्तसु पञ्चानां धातूनां कर्मकर्तरि ,सनि कर्तरि च लटि, लुटि, लुड़ि च प्रथम पुरुषैकवचने रूपाणि लेखनीयानि। १०

(ग) पृष्टेषु सप्तसु पञ्चानां धातूनां यड़ि, लुकि च कर्तरि लटि, लोटि,लुड़ि च मध्यम पुरुषैकवचने रूपाणि लेखनीयानि। १०

(घ) पृष्टेषु सप्तसु पञ्चानां धातूनां णिचि, कर्तरि कर्मणि च लटि, लुटि,लुड़ि च प्रथमपुरुषैकवचने रूपाणि लेखनीयानि। १०

(ड़) पृष्टेषु सप्तसु पञ्च प्रयोगाः सुसाध्याः। २०

(च) पृष्टेषु अष्टासु पञ्चानां शब्दानां द्वयोः वाक्ययोः प्रयोगः करणीय । १०

एम. ए.पाठ्यक्रमस्य चतुर्थसत्रम्

पञ्चमपत्रम्- परमलघुमञ्जुषा नाटकं च

MV- GE-405 (1) Credit-4

पूर्णाङ्कः - १००
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः- ७०
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः- ३०
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य -

- व्याकरणशास्त्र के दार्शनिक सिद्धान्तों शक्तिनिरूपण, लक्षण, व्यञ्जना, आसत्ति इत्यादि से अवगत कराना।
- मुद्राराक्षस ग्रन्थ के माध्यम से चाणक्य के तप व राष्ट्रप्रेम से अवगत कराना।

परिणाम -

- व्याकरणशास्त्र के दार्शनिक सिद्धान्तों से शक्तिनिरूपण इत्यादि एवं लकारार्थ कारकार्थ आदि से अवगत होकर व्याकरण का सूक्ष्मता से अध्ययन कराने में समर्थ हो जाता है।
- मुद्राराक्षस ग्रन्थ के अध्ययन से तप व राष्ट्र प्रेम से परिपूर्ण हो राष्ट्र सेवा हेतु तत्पर रहता है।

इकाई १ - **परमलघुमञ्जुषा** 12

शक्तिनिरूपणम्, लक्षणा, व्यञ्जना, स्फोट, आकाङ्क्षा योग्यता

इकाई २ - **परमलघुमञ्जुषा**

आसत्तिः, तात्पर्यार्थः, धात्वर्थः, निपातार्थः 14

इकाई ३ - **परमलघुमञ्जुषा**

लकारादेशार्थः, कारकार्थः, नामार्थः समासादिवृत्यर्थः 14

इकाई ४ - मुद्राराक्षसः प्रथमांकः 10

इकाई ५ - मुद्राराक्षसः द्वितीयांकः 10

पाठ्यपुस्तकम् -

- **परमलघुमञ्जुषा** - आ. लोकमणिदाहालः
  चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
- **मुद्राराक्षसः** पं० परमेश्वरदीन पाण्डेय एवं श्री अवनिकुमार पाण्डेय

  प्रकाशक - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

अथवा

स्वर्णिमकाल का इतिहास-II

Concept of Greater India
MV-GE-405 (2) Credit-4

Objective :

This course introduces the students how India's society, religions and culture undergoes a sea change during the Gupta Period. This course aims to acquainting students with cultural background, development in Languages, Literature and Arts and Architecture in Early India. It makes them clear that Indian culture is an amalgamation of several cultures. Further, it helps to inculcate the social and moral values among the students. The course covers ancient religious architectures- rock cut and structural, temples, sculptures and the literature on painting from different regions of India from the given period. The course aims to introduce the students to ancient India art, related major sites and structures.

Learning Outcomes:

After the completion of the course, Students will be able to know about the richness of the Indian culture during the ancient period. They will understand the basic concepts associated with the different aspects of socio- cultural life of the above mentioned period. They will understand the Hindu religious movements, customs, traditions, languages, literature, art and architecture. They get to know how culture of Hindu society influenced that of the other contemporary civilizations.

Unit I: Religious Status in the Gupta Period (15 Lect.)

Vedic Religion- Surya, Indra, agni, Varun, Yam, Kuber, Tenacity and Sadhana, Life of Tapovan, Origin of Creation, Method of Yagya. public beliefs and rituals. **Puranic Religions**: **Shaivism**: Bhakti Tradition of Shavism: Pashupat Tradition, Kapalik Tradition, Kalmukh Tradition, Skand, Ganesh and Kartikey, Bhakti Tradition, **Vaishnavism:**Panchratr, Bhagavat, Krishna and doctrine of embodiment: Bhagavan Vishnu ke das Avatar, **Shaktism:**Trideviyan- Historical sources of Lakshmi, Durga and Saraswati.

Unit II:Literary and Creator (13 Lect.)

Development of Sanskrit literature - Fine literature like Avadan, Jataka Mala, PrayagPrashasti composed by Harishena, great poet Kalidas's texts, authors like Bharavi, Bhatti, Shudrak, Visakhadatta, Arthashastra, Dharmashastra, Buddhist literature and Jain literature. Development of Prakrit literature, Apabhramsa literature and Tamil literature.

Unit III: Development of Art (12 Lect.)

Music and theatre, Amazing development of sculpture-Metal idols, Terracotta, Clay pieces, coins of Gupta rulers, Pots, Architecture- architecture in caves, Buddhist Vihara, Stupas and Pillars, Durg and Raj Prasad, Ordinary Residence, Vapi, Coupe, Tadag etc. various dimensions of painting,Styles of Painting - Ajanta Painting

Unit IV:Foreign Expansion of Gupta Culture (10 Lect.)

Relations with China-State goodwill, development of printing arts, relations with Afghanistan, contacts with western countries, relations with eastern countries such as Kamboj, Champa, Varma, Java, Sumatra, Bali and relations with Central Asia

Unit V: Concept of Golden Period (10 Lect.)

Recommended Readings:

Upadhyay B.S. Gupta KalKaSanskritikItihas, Hindi Samiti, Lucknow, 1969

Majumdar, R.C. and A.D. Pusalker (eds.), The History and Culture of the Indian People, Vols. II and III (relevant chapters.), Bombay, 1951-57.

Agrawala, P.K., PrācīnaBhāratīyaKalāevamVāstu (Hindi), Varanasi, 2002.

Agrawala, V.S., BhāratīyaKalā (Hindi), Varanasi, 1994.

Bajpai, K.D., BhāratīyaVāstukalākāItihāsa (Hindi), Lucknow, 1972.

Brown, P., Indian Architecture (Buddhist and Hindu Periods), Vol. I, Bombay, 1971. . . 34

Coomarswamy, A.K., History of Indian and Indonesian Art, London, 1927.

Gupta, P.L., BhāratīyaSthāpatya (Hindi), Varanasi, 1970. Roy, N.C., The Rise and Fall of Pataliputra, Kolkata, 2003.

Basham A. L. The Wonder that was India, London.

एम. ए.पाठ्यक्रमस्य चतुर्थसत्रम्

लघु शोध लेखन

Research Methodology & Project Design

MV-AEC2-406 Credit-4

उद्देश्य-

- व्याकरण विषय के उत्कृष्ट शोध का प्रारम्भ करना, शोध की प्रवृत्ति/रुचि को जागरित कराना तथा लेखन व शोधन की तकनीक से परिचय कराना।

परिणाम-

- शोध सम्बन्धि एक लघु शोध प्रबन्ध से वह बड़े शोधों को करने में समर्थ हो जाता है।
- उसमें लेखन कौशल का विकास एवं अन्वेषण की क्षमता का विकास होगा। जिससे वह नवीन प्रौढ़ शास्त्रों के लेखन में स्वयं को नियोजित करता है।

एम.ए. व्याकरण में पठित विषय से सम्बन्धित किसी एक विषय पर सृजनात्मक व प्रामाणिक लघु शोध लेखन

यथा-

.

.

.

.

.

उपरोक्त विषयों से अतिरिक्त दर्शनशास्त्र से सम्बद्ध किसी रचनात्मक विषय का चयन भी छात्र अपनी रूचि व योग्यतानुसार कर सकते हैं।

नोट : लघु शोध लगभग 30-50 पृष्ठ में हो।